दस

नया जन्म

The New Birth

जब लोग पश्चात्ताप कर प्रभु यीशु पर विश्वास करते हैं, तब उनका ''फिर से जन्म'' होता है। फिर से जन्म या नया जन्म होने का वास्तव में क्या अर्थ है? यह अध्याय इसी के बारे में है।

फिर से जन्म लेने का क्या अर्थ है, इस बारे में जानने को मानव स्वभाव को समझना ज़रूरी है। पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि हम शारीरिक ही नहीं, बल्कि आत्मिक प्राणी भी हैं। उदाहरण के लिए, पौलुस ने लिखा,

> शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे : और तुम्हारी *आत्मा* और *प्राण* और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे-पूरे और निर्दोष और सुरक्षित रहें (1 थिस्स. 5:23, पर बल दिया गया है)।

पौलुस के निर्देशानुसार, हम स्वयं को इन तीन भागों से जोड़े जाने पर विचार सकते हैं– आत्मा, प्राण और देह। पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप में इन तीनों भागों को परिभाषित नहीं करता है, इसलिए हम वचन की अपनी समझ के आधार पर इनमें अन्तर करते हैं। हम सामान्यता यह परिणाम निकालते हैं कि हमारी देह शारीरिक है-मांस, हड्डियां, खून इत्यादि से बनी हुई। हमारा *प्राण* हमारा बौद्धिक और भावनात्मक अस्तित्व है-हमारा मन। हमारी *आत्मा* निस्संदेह हमारा आत्मिक स्वरूप है, या फिर प्रेरित पतरस जैसा उसके बारे में बताता है, ''छिपा हुआ मनुष्यत्व'' (1 पत. 3:4)।

क्योंकि आत्मा को शारीरिक आंख से देखा नहीं जाता, उद्धार न पाए लोग इसी कारण इसे महत्व नहीं देते। तौभी, बाइबल इस बारे में बहुत स्पष्ट है कि हम सभी आत्मिक प्राणी हैं। पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि एक व्यक्ति की मृत्यु होने पर केवल उसकी देह ही कार्य करना बन्द कर देती है, जबकि उसका प्राण और आत्मा हमेशा

की तरह कार्य करते रहते हैं। मृत्यु होने पर, वे परमेश्वर के न्याय आसन के सामने खड़े होने को देह को छोड़ देते हैं (देखें इब्रा. 9:27)। न्याय के पश्चात् वे स्वर्ग या नरक जाते हैं। अंत में, प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा और प्राण देह के पुनरुत्थान पर उससे मिल जाएगी।

मानव आत्मा को अधिक परिभाषित किया जाना
The Human Spirit More Defined

1 पतरस 3:4 में, पतरस ने आत्मा को *''छिपा मनुष्यत्व''* कहा है, यह संकेत देते हुए कि आत्मा एक *व्यक्ति* है। पौलुस ने भी आत्मा का उल्लेख ''भीतरी मनुष्यत्व'' के रूप में किया, अपने विश्वास को इंगित करते हुए कि मानव आत्मा केवल एक धारणा या शक्ति नहीं है, बल्कि एक व्यक्ति है :

> इसलिये हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा *बाहरी मनुष्यत्व* नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा *भीतरी मनुष्यत्व* दिन प्रतिदिन नया होता जाता है(2 कुरि. 4:16, पर बल दिया गया है)।

''बाहरी मनुष्यत्व'' बेशक शारीरिक देह को बताता है, जबकि ''भीतरी मुनष्यत्व'' आत्मा का उल्लेख करता है। जबकि देह बूढ़ी होती जाती है, आत्मा प्रतिदिन नई होती जाती है।

फिर से ध्यान दें कि पौलुस ने देह और आत्मा का उल्लेख *व्यक्तियों* के रूप में किया है। अत: अपनी आत्मा के बारे में कल्पना करने पर किसी बादल की कल्पना न करें। एक ऐसे *व्यक्ति* की कल्पना करना अच्छा है जो आपके समान दिखता हो। यदि आपकी देह बूढ़ी है तो यह न सोचें कि आपकी आत्मा भी बूढ़ी दिखती है। आप अपने जीवन में पहले जैसे दिखते थे, उसकी कल्पना करें क्योंकि आपकी आत्मा कभी भी बूढ़ी नहीं होती है। यह दिन प्रतिदिन नई होती जाती है।

आपकी आत्मा ही वह भाग है जिसका फिर से जन्म होता है। (यदि आपने प्रभु यीशु पर विश्वास किया है) आपकी आत्मा परमेश्वर के आत्मा से मिल गई है (देखें 1कुरि. 6:17), और वही आपके यीशु के पीछे चलने पर आपका मार्गदर्शन करता है। (देखें रोमि. 10:14)।

बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर भी एक आत्मा है (देखें यूहन्ना 4:24), और इसी तरह से स्वर्गदूत और दुष्टात्माएं भी हैं। उन सभी का एक रूप है और वे सभी आत्मिक क्षेत्र में पाए जाते हैं। आत्मिक क्षेत्र को, तौभी, हमारी भौतिक संवेदनाओं से महसूस नहीं किया जा सकता है। अपनी भौतिक संवेदनाओं से आत्मिक संसार से संपर्क करने का प्रयास अपने हाथों से रेडियो सिगनल को अनुभव करने का प्रयास करने के समान होगा। हम अपनी भौतिक (शारीरिक) संवेदनाओं से यह अनुभव नहीं कर सकते हैं कि रेडियो

तरंगें कमरे से होकर जा रही हैं, लेकिन यह प्रमाणित नहीं करता कि रेडियो तरंगें कमरे में नहीं हैं। इसे पता लगाने का एकमात्र तरीका रेडियो को चालू करना है।

आत्मिक क्षेत्र में भी यह सत्य है। आत्मिक क्षेत्र को शारीरिक संवेदनाओं द्वारा अनुभव किया जाना इसके अस्तित्व को अप्रमाणित नहीं करता। इसका अस्तित्व है, और चाहे लोग जानें या न जानें, आत्मिक प्राणी होने के कारण आत्मिक क्षेत्र के भाग हैं। वे आत्मिक रूप से या तो शैतान से संबधित हैं (यदि उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया है) या आत्मिक रूप से परमेश्वर से संबन्धित हैं (यदि उनका फिर से जन्म हुआ है)। कुछ अध्यात्मवादियों ने अपनी आत्माओं द्वारा आत्मिक संसार से संबन्धित होना सीखा है, लेकिन वे शैतान के प्रभुत्व वाले क्षेत्र से संपर्क कर रहे हैं–अंधकार के राज्य से।

अनन्त देह

Eternal Bodies

जबकि हम विषय पर हैं, मैं कुछ क्षण अपनी देहों के बारे में बताने में लेना चाहता हूं। यद्यपि अन्त में वे मर जाएंगी, तौभी हमारी शारीरिक मृत्यु स्थायी नहीं है। वह दिन आ रहा है जब परमेश्वर स्वयं प्रत्येक मृत मानव देह को पुनरुत्थित करेगा। यीशु ने कहा,

> इससे अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे (यूहन्ना 5:28-29)।

प्रेरित यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में लिखा कि अधर्मी देहों का पुनरुत्थान धर्मी देहों के पुनरुत्थान के हज़ार वर्ष पश्चात् होगा:

> वे (धर्मी जन, जो सताव के दिनों में शहीद हुए थे) जीवित होकर मसीह के साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करते रहे। और जब तक ये हज़ार वर्ष पूरे न हुए तब तक शेष मरे हुए न जी उठे; यह तो पहला मृतकोत्थान है।[50] धन्य और पवित्र वह है, जो इस पहले पुनरुत्थान का भागी है, ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं, पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे (प्रका. 20: 4ब-6)।

50. क्योंकि यूहन्ना कहता है कि यह "प्रथम पुनरुत्थान" है, इससे हम यह विश्वास करते हैं कि इससे पहले कोई दूसरा सामूहिक पुनरुथान नहीं हुआ था। क्योंकि यह यीशु की वापसी पर विश्वव्यापी सताव के समय पर होना है, यह सताव पूर्व उठाए जाने के विचार के विरुद्ध है, क्योंकि हम जानते हैं कि 1 थिस्स. 4: 13-17 के अनुसार कलीसिया के उठाए जाने पर जब यीशु स्वर्ग से आएगा तब एक सामूहिक पुनरुथान होगा। इस बारे में हम बाद में *उठाया जाना और अन्तिम समय* नामक अध्याय में विस्तार से अध्ययन करेंगे।

बाइबल हमें यह भी जानकारी देती है कि यीशु के कलीसिया को उठाने की वापसी पर, सभी धर्मियों की मृत देहें पुनरुत्थित होकर अपनी अपनी आत्मा से जुड़कर इस पृथ्वी के वातावरण से यीशु के साथ स्वर्ग लौट जाएंगी:

> क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं, कि यीशु मरा और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा। क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे (1 थिस्स. 4:14-17)।

परमेश्वर ने मूल मनुष्य को मिट्टी की धूल से बनाया, और उसके लिए उसी सामग्री से प्रत्येक व्यक्ति की देह से तत्वों को लेकर नई देहों को बनाने में कोई परेशानी नहीं होगी।

हमारी देहों के पुनरुत्थान के संबन्ध में पौलुस ने लिखा,

> मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है। वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है, और सामर्थ के साथ जी उठता है। स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है। हे भाइयो, मैं यह कहता हूं कि मांस और लहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न विनाश अविनाशी का अधिकारी हो सकता है। देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे। और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे, और हम बदल जाएंगे, क्योंकि अवश्य है कि यह नाशमान देह अविनाश को पहन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहन ले (1कुरि. 15:42-44अ, 50-53)।

इस पर ध्यान दें कि हमारी देहों की अद्वितीय विशेषता यह है कि वे अविनाशी और अमर हो जाएंगी। वे कभी भी बूढ़ी नहीं होंगी, बीमार नहीं होंगी और मरेंगी नहीं। हमारी नई देहें उस नई देह के समान हो जाएंगी जिसे यीशु ने अपने पुनरुत्थान के पश्चात् ग्रहण किया था।

> पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है, और हम एक उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आने की बाट जोह रहे हैं। वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, *हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा* (फिलि. 3:20-21, पर बल दिया गया है)।

प्रेरित यूहन्ना भी इस अद्‌भुत सत्य की पुष्टि करता है:

> हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे। पर इतना जानते हैं कि *जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे,* क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है (यूहन्ना 3:32, पर बल दिया गया है)।

हमारे मनों के लिए इसे पूरी तरह से समझना भी असंभव है कि हम उस पर विश्वास करने के साथ-साथ आनन्दित भी हो सकते हैं जो हमारे लिये आगे रखा है।[51]

नये जन्म पर यीशु
Jesus on the New Birth

एक बार यीशु नीकुदेमुस नामक यहूदी से पवित्र आत्मा के कार्य द्वारा मानव आत्मा के फिर से जन्म लेने की आवश्यकता के बारे में बोला था।

> यीशु ने उसको (नीकुदेमुस को) उत्तर दिया; कि ''मैं तुझसे सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।'' नीकुदेमुस ने उससे कहा, ''मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?'' यीशु ने उत्तर दिया, कि ''मैं तुझसे सच सच कहता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। अचम्भा न कर, कि मैंने तुझसे कहा; कि 'तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य हैं' (यूहन्ना 3:3-7)

सबसे पहले, नीकुदेमुस ने सोचा कि यीशु शारीरिक रूप से नया जन्म लेने के

51. पुनरुत्थान विषय पर अतिरिक्त अध्ययन के लिए, देखे यानि 12:1-2; यूहन्ना 11:23-26, प्रेरित. 1 कुरि. 15:1-57 देखें

बारे में बोल रहा था, जब उसने (यीशु ने) कहा कि स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए एक व्यक्ति का फिर से जन्म लेना अवश्य है। तथापि, यीशु ने यह स्पष्ट किया कि वह आत्मिक रूप से फिर से जन्म लेने के बारे में बोल रहा था। अर्थात्, एक व्यक्ति की आत्मा का फिर से जन्म लेना ज़रूरी है।

हमारे लिए आत्मिक रूप से फिर से जन्म लेना इसलिए ज़रूरी है क्योंकि हमारी आत्मा बुराई और पापी स्वभाव से संक्रमित हो गई है। इस पापी स्वभाव का बाइबल में सामान्यता *मृत्यु* के रूप में उल्लेख किया जाता है। समझाने के लिए, हम इस बुरे स्वभाव का उल्लेख *आत्मिक मृत्यु* के रूप में करेंगे जिससे हम इसमें और शारीरिक मृत्यु (जब शारीरिक देह कार्य करना बन्द कर देती है) में अन्तर कर सकें।

आत्मिक मृत्यु की परिभाषा
Spiritual Death Defined

पौलुस ने इफिसियों 2:1-3 में स्पष्ट किया है कि आत्मिक रूप से मृत्यु होना क्या है:

> और उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण *मरे हुए* थे। जिनमें तुम पहिले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। इन में हम भी सब के सब पहिले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर, और मन की मनसाएं पूरी करते थे, और और लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे। (इस पर बल दिया गया है)।

पौलुस निस्संदेह शारीरिक मृत्यु के बारे में नहीं बोल रहा था, क्योंकि वह शारीरिक रूप से जीवित लोगों के बारे में बोल रहा था। तथापि, उसने कहा कि वे पहले ''अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।'' पाप ही आत्मिक मृत्यु के द्वार को खोलता है (देखें रोमि. 5:12)। आत्मिक रूप से मृत्यु होने का अर्थ अपनी आत्मा में पापी स्वभाव का होना है पौलुस ने कहा कि आत्म्कि रूप से मृत लोगों में ''आकाश के अधिकार के हाकिम'' की आत्मा कार्यरत् है। ''आकाश के अधिकार का हाकिम'' निस्संदेह शैतान ही है (देखें इफि. 6:12), और उसकी आत्मा सभी न बचाए हुओं में कार्य करती है।

यीशु ने पुनरुज्जीवित यहूदियों से बोलते हुए कहा,

> तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर

> स्थिर न रहा क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं: जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से झूठ बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन् झूठ का पिता है (यूहन्ना 8:44)।

एक आत्मिक दृष्टिकोण से, नया जन्म न जन्म लेनेवालों की आत्माएं न केवल शैतानी स्वभाव की वास होती है, बल्कि शैतान उनका आत्मिक पिता होता है। वे स्वाभाविक रूप से दुष्ट के समान कार्य करते हैं। वे हत्यारे और झूठे हैं।

सभी उद्धार न पाए लोग हत्यारे नहीं हैं, लेकिन हत्यारों को समान ही घृणा से प्रेरित होते हैं, और वे समय आने पर हत्या भी करनेवाले बन जाते हैं। अधिकांश देशों में गर्भपात की विधिवादिता इस सच्चाई को प्रमाणित करती है। उद्धार न पाए लोग अपने अजन्मे शिशुओं की भी हत्या कर देंगे।

इसी कारण एक व्यक्ति के लिए आत्मिक रूप से फिर से जन्म लेना ज़रूरी है। एक बार उसके ऐसा करने पर, उसकी आत्मा से शैतानी स्वभाव के चले जाने पर उसका स्थान परमेश्वर का पवित्र स्वभाव ले लेता है। परमेश्वर का पवित्र आत्मा उसके आत्मा में वास करने के लिए आता है। उसकी आत्मा अधिक समय तक मृत नहीं रहती बल्कि परमेश्वर में जीवित हो जाती है। शैतान की आत्मिक संतान होने के बजाय, वह परमेश्वर की आत्मिक संतान बन जाता है।

सुधार पुनरुज्जीवन का प्रतिस्थापन नहीं है

Reformation is No Substitute for Regeneration

उद्धार न पाए लोगों के आत्मिक रूप से मृत होने के कारण वे अपने स्वयं के सुधार हेतु चाहे कितना भी प्रयास क्यों न करें, वे बचाए नहीं जा सकते। उद्धार न पाए लोगों में एक नया स्वभाव होना ज़रूरी है, केवल नये बाहरी कार्य ही नहीं। आप एक सूअर को लेकर उसे अच्छी तरह से नहला-धुलाकर उस पर इत्र लगाकर उसके गले में एक अच्छा गुलाबी रिबन बांध सकते हैं, लेकिन आपके द्वारा की जाने वाली ये सारी चीज़ें सूअर को साफ नहीं रख सकती हैं। उसका स्वभाव वैसा ही रहेगा और कुछ ही देर में वह गन्दगी को सूंघते हुए कीचड़ में लेटेगा।

यही बात उन धर्मी लोगों पर भी सही बैठती है जिनका कभी भी फिर से जन्म नहीं हुआ है। हो सकता है कि वे बाहर से कुछ अवश्य ही साफ हो जाएं, लेकिन भीतर से वे सदा के समान ही गन्दे रहते हैं। यीशु ने अपने दिनों के कुछ धर्मी लोगों से कहा,

> हे कपटी शास्त्रियो, और फरीसियों, तुम पर हाय, तुम कटोरे और थाली को ऊपर-ऊपर से तो मांजते हो परन्तु वे भीतर अन्धेर, असंयम से भरे हुए हैं। हे अन्धे फरीसी, पहले कटोरे और थाली को भीतर से मांज कि वे बाहर से भी स्वच्छ हों। हे कपटी शास्त्रियो, और फरीसियो, तुम पर हाय; तुम चूना फिरी हुई कब्रों के समान

> हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं। इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो (मत्ती 23:25-28)।

यीशु के शब्द उन सभी धर्मियों के बारे में बताते हैं जिन्होंने कभी भी पवित्र आत्मा में नये जन्म का अनुभव नहीं पाया है। नया जन्म लोगों को बाहर से ही नहीं बल्कि भीतर से भी साफ करता है।

आत्मा के फिर से जन्म होने पर हमारे प्राणों का क्या होता है?

What Happens to the Soul When the Spirit is Reborn?

एक व्यक्ति की आत्मा का फिर से जन्म होने पर, उसके प्राण पर आरम्भ में तो कोई प्रभाव नहीं पड़ता (इस सच्चाई को छोड़ कि उसने मन में यीशु के पीछे चलने का निर्णय ले लिया है)। तौभी, परमेश्वर हमसे उसकी सन्तान बन जाने के बाद अपने प्राणों से कुछ करने की अपेक्षा करता है। हमारे प्राण (मन) परमेश्वर के वचन के साथ नये बनाए जाने चाहिए जिससे हम वैसा ही सोचें जैसा परमेश्वर चाहता है कि हम सोचें। हमारे मनों के नये बनने के द्वारा ही हमारे बाहरी जीवन में परिवर्तन होता रहता है, ताकि हम अधिक से अधिक यीशु के समान हो सकें:

> और इस संसार के सदृश न बनो, परन्तु *तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए,* जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो (रोमि. 12:2 पर बल दिया गया है।)।

याकूब ने भी विश्वासी के जीवन में होनेवाली इस प्रक्रिया के बारे में लिखा है,

> उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है (याकू. 1:21ब)

ध्यान दें कि याकूब मसीहियों को लिख रहा था– वे लोग जिनकी आत्मा का पहले से ही नया जन्म हो चुका था। लेकिन उनके लिए अपने प्राणों को बचाना भी ज़रूरी था, और ऐसा केवल तब ही होगा जब वे ''बोए गए वचन' को नम्रता से ग्रहण करेंगे। इसी कारण नये विश्वासियों को परमेश्वर के वचन के बारे में सिखाना ज़रूरी है।

पुराने स्वभाव के अवशेष

The Residue of the Old Nature

अपने नये जन्म के पश्चात् मसीहियों ने शीघ्र ही यह जान लिया कि वे दो स्वभाव

वाले लोग हैं, उसे अनुभव करते हुए जिसे पौलुस ''आत्मा और देह'' के बीच युद्ध कहता है:

> क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं, इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ (गल. 5:17)।

पुराने पापी स्वभाव के अवशेष को पौलुस ''देह'' कहता है। हमारे भीतर पाए जाने वाले ये दो स्वभाव विभिन्न इच्छाओं को उत्पन्न करते हैं, जो उत्पन्न होने पर विभिन्न जीवन प्रणाली और कार्यों को उत्पन्न करते हैं। पौलुस द्वारा ''देह के कार्यों'' और ''आत्मा के फल'' के बीच की जाने वाली तुलना पर ध्यान दें।

> शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इनके ऐसे और काम हैं, इनके विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता हूं, जैसा पहिले कह भी चुका हूं, कि ऐसे-ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। पर आत्मा का फल, प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं (गल. 5:19-23)।

मसीहियों के लिए निस्संदेह देह के लिए फल उत्पन्न करना संभव है, अन्यथा पौलुस उन्हें इस तरह से चेतावनी नहीं देता कि यदि वे देह की अभिलाषाओं के पीछे चलना जारी रखेंगे तो वे परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं होंगे। रोमियों को लिखे अपने पत्र में, पौलुस ने प्रत्येक मसीही के दोनों स्वभावों के बारे में भी लिखा है और उसी के साथ साथ उसने देह के लिए फल उत्पन्न करने पर भी चेतावनी दी है।

> और यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है—सो हे भाइयो, हम शरीर के कर्ज़दार नहीं, ताकि शरीर के अनुसार दिन काटें...*क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे...* यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे। इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं (रोमि. 8:10,12,14, पर बल दिया गया है)।

यह स्पष्ट रूप में मसीहियों को दी गई चेतावनी है। देह के अनुसार जीना (जो नियमित रूप से किये जानेवाले कार्य की ओर संकेत देता है) मृत्यु को उत्पन्न करता है। पौलुस आत्मिक मृत्यु के बारे में चेतावनी दे रहा है, क्योंकि हर कोई अन्ततः शारीरिक रूप से मरता है, वे मसीही भी जो ''देह के कार्यों को पूरा करते हैं।''

एक मसीही *अस्थाई* रूप में पौलुस द्वारा सूचीगत किसी भी एक पाप में गिर सकता है, लेकिन वह दोष भावना को अनुभव कर पश्चात्ताप कर लेता है। हर कोई जो अपने पापों को स्वीकार कर परमेश्वर से क्षमा मांगता है वह निस्संदेह शुद्ध होगा (देखें 1 यूह. 1:9)।

एक मसीही के पाप करने का अर्थ यह है कि उसका परमेश्वर के साथ *संबन्ध* टूट गया है–इसका अर्थ उसकी *सहभागिता* का टूटना है। वह अभी भी परमेश्वर की संतान है, लेकिन अब वह परमेश्वर का अनाज्ञाकारी बच्चा है। अपने पाप का अंगीकार न करने पर विश्वासी स्वयं को परमेश्वर द्वारा अनुशासित किये जानेवाले स्थान पर लेकर आता है।

युद्ध
The War

यदि आप स्वयं को उन चीज़ों की अभिलाषा करते पाएं जो कि आपके अनुसार गलत हैं, इसका अर्थ यह हुआ कि आप ''देह की अभिलाषा'' को अनुभव करते हैं। निस्संदेह आप यह भी जान जाते हैं कि देह के द्वारा आपको कुछ गलत करने की परीक्षा में डालने पर, आप अपने भीतर किसी चीज़ को उस अभिलाषा का सामना करता हुआ पाते है। और परीक्षा में पड़ने पर जब आप अपने भीतर अपराध बोध की भावना पाते हैं, तब आप अपनी आत्मा की आवाज़ को जान जाते हैं जिसे हम अपना ''विवेक'' कहते हैं।

परमेश्वर यह अच्छी तरह से जानता है कि हमारी दैहिक अभिलाषाएं हमें गलत करने की परीक्षा में डालेंगी। तौभी, यह देह की अभिलाषाओं के अनुसार फल उत्पन्न करने का कोई बहाना नहीं है। परमेश्वर अभी भी हम से पवित्रता और आज्ञाकारिता में होकर कार्य करने व दैहिक स्वभाव पर विजय पाने की आशा रखता है।

> पर मैं कहता हूं आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरा न करोगे (गल 5:16)।

देह पर विजयी होने का कोई जादुई सूत्र नहीं है। पौलुस ने सरलता से कहा कि हमें ''आत्मा के अनुसार'' चलना चाहिए (गल. 5:16)। इस क्षेत्र में किसी भी मसीही को दूसरे मसीही पर अधिकार है। आत्मा के अनुसार चलने का निर्णय, हममें से प्रत्येक को लेना चाहिए, और परमेश्वर के प्रति हमारा समर्पण उस मात्रा में पाया जा सकता है जिसके लिए हम देह की अभिलाषाओं को उत्पन्न करते हैं।

इसी तरह से पौलुस ने लिखा:

> और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है (गल. 5:24)।

उस पर ध्यान दें जो पौलुस कहता है कि जो मसीह यीशु के हैं (भूतकाल) उन्होंने *देह को क्रूस पर चढ़ा दिया है।* ऐसा हमारे पश्चात्ताप करने और प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाने पर हुआ। हमने परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने व पाप का विरोध करने का निर्णय लेते हुए अपने पापी स्वभाव को क्रूस पर चढ़ा दिया है। अत: अब यह देह को क्रूस पर चढ़ाने का विषय नहीं बल्कि देह को क्रूसित रखने का विषय है।

देह को सदैव क्रूसित अवस्था में रखना सरल नहीं होता, ऐसा करना असंभव है। यदि हम देह की भावनाओं से प्रेरित होने की अपेक्षा भीतरी व्यक्तित्व से प्रेरित होकर कार्य करेंगे तो हम मसीह के जीवन को प्रगट करते हुए उसके सम्मुख पवित्रता में चलेंगे।

हमारी मनोरंजनात्मक आत्माओं का स्वभाव

The Nature of our Recreated Spirits

हमारी मनोरंजनात्मक आत्माओं के स्वभाव को बताने वाला एक शब्द है, और वह है *मसीह।* पवित्र आत्मा के द्वारा जिसका कि मसीह यीशु के समान स्वभाव है, हममें वास्तव में यीशु का स्वभाव वास करता है। पौलुस ने लिखा, ''अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है'' (गल. 2:20)।

हममें उसका स्वभाव और योग्यता होने के कारण, हममें मसीह के समान रहने की अद्‌भुत संभावना होती है। हमें वास्तव में *अधिक* प्रेम, धीरज या आत्म-नियंत्रण की ज़रूरत नहीं होती। हमारे भीतर सबसे अधिक प्रेमी, धीरजवान, आत्म-नियंत्रित व्यक्ति वास करता है। हम सभी को उसे अपने भीतर आने की अनुमति देनी है।

तथापि, हमारे भीतर एक सबसे बड़ी विरोधी शक्ति पाई जाती है जो यीशु के स्वभाव के विरुद्ध लड़ती है, उसे हमारे द्वारा प्रगट होने से रोकते हुए; और वह हमारी देह है। पौलुस के इस तरह से कहने में कोई आश्चर्य नहीं कि हमें अपनी देह को *क्रूसित* करना चाहिए। अपने शरीर के साथ कुछ करने की ज़िम्मेदारी हमारी है, और परमेश्वर से इस बारे में कुछ करने को कहना समय बर्बाद करना है। पौलुस की भी अपनी दैहिक स्वभाव को लेकर कुछ समस्याएं थीं, लेकिन उसने इसकी ज़िम्मेदारी लेकर इस पर विजय प्राप्त की।

मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूं, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं (1 कुरि. 9:27)।

यदि आप परमेश्वर के सम्मुख पवित्रता से चलना चाहते हैं तो आपको अपनी देह को अपनी आत्मा का दास बनाना होगा। आप ऐसा कर सकते हैं!